Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

आषाढ़ का एक दिन’ में मल्लिका और उसकी माँ अम्बिका के संबंधों की वर्तमान समय मे प्रसंगिकता

प्रियंका शर्मा
शोधर्थी, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

संक्षेप

मोहन राकेश के नाटक *‘आषाढ़ का एक दिन’* में मल्लिका और उसकी माँ अंबिका के बीच का संबंध भावनात्मक निकटता, वैचारिक भिन्नता और जीवन-दृष्टि के द्वंद्व का सशक्त चित्रण करता है। अंबिका एक यथार्थवादी माँ हैं, जो जीवन की कठिन सच्चाइयों से अवगत हैं, जबकि मल्लिका प्रेम और भावना के स्तर पर जीने वाली युवती है। यह द्वंद्व आज की पीढ़ी में भी माँ-बेटी के रिश्तों में प्रकट होता है, जहाँ युवा बेटियाँ आत्मनिर्णय और स्वतंत्रता चाहती हैं, जबकि माताएँ अनुभव के आधार पर उन्हें चेतावनी देती हैं। अंबिका, मल्लिका को रोकती नहीं, बल्कि उसे सचेत करती हैं—यह भूमिका आज के माता-पिता के लिए भी आदर्श बन सकती है। दोनों के रिश्ते में संवाद, असहमति और अंततः मौन सहमति का जो स्वर है, वह आज के पारिवारिक जीवन में भी सामंजस्य और समझदारी की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

Keywords: मल्लिका, अंबिका, पीढ़ीगत द्वंद्व, स्वतंत्रता, पारिवारिक सामंजस्य

प्रस्तावना

मोहन राकेश कृत *‘आषाढ़ का एक दिन’* केवल एक ऐतिहासिक या प्रेम-कथा न होकर संबंधों की गहराई, स्त्री मन की संवेदनशीलता, और पीढ़ियों के बीच संवाद की जटिलता को उजागर करने वाला नाटक है। इस संदर्भ में मल्लिका और उसकी माँ अंबिका के बीच का संबंध विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो वर्तमान समय में भी उतना ही प्रासंगिक और भावनात्मक रूप से प्रभावी है। मल्लिका एक संवेदनशील, प्रेम में समर्पित और त्यागमयी स्त्री है, जबकि अंबिका यथार्थवादी, जीवन के कटु अनुभवों से परिचित, व्यावहारिक सोच वाली एक परिपक्व माँ है। इन दोनों पात्रों की भिन्न दृष्टिकोणों के बावजूद, उनके बीच का संबंध एक गहरे आत्मीय संवाद, टकराहट और परस्पर समझ का परिचायक बन जाता है। आधुनिक

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में जहाँ पीढ़ियों के बीच मूल्यबोध, स्वतंत्रता, प्रेम और जीवन के विकल्पों को लेकर मतभेद सामने आते हैं, वहाँ मल्लिका और अंबिका का रिश्ता एक आदर्श संवाद की मिसाल प्रस्तुत करता है। अंबिका अपनी बेटी के प्रेम को अस्वीकार नहीं करती, किंतु जीवन की कठोर सच्चाइयों से उसे सावधान भी करती है। वह अनुभव की ज़मीन पर खड़ी है, जबकि मल्लिका भावना की उड़ान में। यह द्वंद्व आज भी हर उस माँ-बेटी के रिश्ते में दिखता है जहाँ युवा पीढ़ी आत्मनिर्णय चाहती है और पुरानी पीढ़ी उसे दिशा देना। आज के समय में जब प्रेम, करियर और आत्मनिर्भरता के बीच युवा स्त्रियाँ अनेक चुनौतियों से गुजरती हैं, अंबिका जैसे पात्र माता-पिता के रूप में मार्गदर्शक भूमिका में और अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। यह संबंध यह भी दर्शाता है कि संवाद, सहमति-असहमति और भावनात्मक समर्थन परिवार में किस तरह संतुलन ला सकते हैं। अतः *'आषाढ़ का एक दिन'* में मल्लिका और अंबिका का रिश्ता आज भी वैचारिक द्वंद्व, स्त्री स्वातंत्र्य, और माँ-बेटी के आत्मीय रिश्तों को समझने की दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक और शिक्षाप्रद है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

मोहन राकेश के नाटक *'आषाढ़ का एक दिन'* में मल्लिका और उसकी माँ अंबिका के संबंध एक ऐसे भावनात्मक और वैचारिक द्वंद्व का चित्रण करते हैं, जो आज के समय में भी माँ-बेटी के संबंधों की यथार्थता को प्रतिबिंबित करता है। अंबिका अनुभव की भूमि पर खड़ी हुई एक यथार्थवादी माँ हैं, जबकि मल्लिका भावनाओं में जीने वाली, प्रेम और त्याग की मूर्ति है। यह द्वंद्व वर्तमान समाज में भी देखा जा सकता है, जहाँ युवा पीढ़ी स्वतंत्र निर्णय लेना चाहती है और माता-पिता मार्गदर्शन के साथ संयम की सलाह देते हैं। अंबिका मल्लिका को रोकती नहीं, बल्कि उसे भावनात्मक रूप से तैयार करती हैं, जो आज के माता-पिता के लिए एक प्रेरणास्रोत है। यह संबंध आत्मीयता, समझदारी और संवाद का प्रतीक है, जो बदलते सामाजिक परिवेश में पारिवारिक रिश्तों की स्थिरता और गरिमा की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

मल्लिका और अंबिका के संबंध की प्रकृति

मोहन राकेश कृत *'आषाढ़ का एक दिन'* में मल्लिका और उसकी माँ अंबिका के बीच का संबंध एक गहरे भावनात्मक संवाद और वैचारिक अंतर का जीवंत चित्रण है, जो भारतीय पारिवारिक संरचना में माँ-बेटी के रिश्ते की जटिलता और सौंदर्य को उजागर करता है। यह संबंध आत्मीयता, त्याग, चिंता और

मार्गदर्शन का सम्मिलित स्वरूप है, जिसमें न केवल पारंपरिक मातृत्व की झलक है, बल्कि एक आधुनिक, सहृदय और सहनशील माँ का प्रतिबिंब भी मिलता है। अंबिका एक अनुभवशील, यथार्थवादी माँ हैं जो जीवन की कठोरताओं को भलीभांति समझती हैं और अपनी बेटी मल्लिका को उनसे बचाना चाहती हैं, लेकिन वह मल्लिका के निर्णयों पर कठोरता नहीं थोपती। मल्लिका, जो कालिदास से निष्कलंक प्रेम करती है और उसके उज्जयिनी जाने के निर्णय को आत्मबलिदान की भावना से सहर्ष स्वीकारती है, अपनी माँ से आत्मीय संवाद बनाए रखती है। अंबिका कई बार उसे भावावेश से उबरने की सलाह देती है, परंतु उस पर मानसिक दबाव नहीं डालती। वह अपनी बेटी के प्रेम को अस्वीकार नहीं करती, बल्कि उसे यथार्थ की रोशनी में देखने का प्रयास करती है। यह परामर्श और विरोध के बीच का भावनात्मक संतुलन ही उनके संबंध को अत्यंत गहरा और यथार्थपरक बनाता है। अंबिका का संवादों के माध्यम से बेटी को चेताना, उसे मानसिक रूप से तैयार करना और अंततः उसके फैसले को स्वीकार कर उसे दिशा देना यह दर्शाता है कि माँ-बेटी के रिश्ते केवल भावुकता पर नहीं, परस्पर समझ और विश्वास पर टिके होते हैं। अंबिका उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती हैं जो अनुभवी हैं, लेकिन अपनी संतानों की स्वतंत्रता का सम्मान करना जानती हैं। वहीं मल्लिका नई पीढ़ी की प्रतीक है, जो प्रेम, भावना और आत्म-त्याग में अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेती है। उनके बीच कोई विद्रोह नहीं, कोई विद्वेष नहीं—सिर्फ आत्मीय संवाद, मौन सहमति और भावनात्मक साहचर्य है। यह संबंध भारतीय पारिवारिक मूल्यों में स्त्री-स्त्री संवाद की एक उत्कृष्ट मिसाल प्रस्तुत करता है, जो आज के बदलते सामाजिक परिदृश्य में भी उतना ही प्रासंगिक और प्रेरणादायी है। मल्लिका और अंबिका का यह रिश्ता मातृत्व और स्वायत्तता के बीच एक आदर्श संतुलन की संरचना करता है, जो नारी जीवन की गरिमा, निर्णय की स्वतंत्रता और पारिवारिक समर्थन की सार्थकता को उजागर करता है।

मोहन राकेश कृत 'आषाढ़ का एक दिन'

- **मोहन राकेश का संक्षिप्त परिचय**

मोहन राकेश आधुनिक हिंदी साहित्य और रंगमंच के उन विरल रचनाकारों में हैं, जिन्होंने न केवल कथा और नाटक की विधाओं को एक नया आयाम दिया, बल्कि हिंदी रंगमंच को संवेदनशीलता, यथार्थ और संवाद-केंद्रित प्रस्तुति की दिशा में अग्रसर किया। उनका जन्म 8 जनवरी 1925 को अमृतसर (पंजाब) में हुआ। मूल नाम मदन मोहन उगलानी था। उनके पिता एक वकील थे, जो साहित्य और संगीत में गहरी

रुचि रखते थे—और यही रुचि मोहन राकेश के व्यक्तित्व और लेखन में परिलक्षित होती है। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से हिंदी और अंग्रेज़ी में एम.ए. किया तथा जालंधर, शिमला, दिल्ली और मुंबई जैसे शहरों में अध्यापन से लेकर साहित्य संपादन तक का कार्य किया। बाद में वे स्वतंत्र लेखन में पूर्ण रूप से रत हो गए। उन्हें 'नई कहानी आंदोलन' का अग्रणी हस्ताक्षर माना जाता है, परंतु नाट्य साहित्य में उनका योगदान भी समान रूप से क्रांतिकारी रहा है। उनकी प्रमुख कृतियों में नाटकों की श्रेणी में *'आषाढ़ का एक दिन'* (1958), *'लहरों के राजहंस'* (1963), *'आधे-अधूरे'* (1969), और *'पैर तले की ज़मीन'* (जो बाद में कमलेश्वर द्वारा पूर्ण किया गया) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उपन्यासों में *'अँधेरे बंद कमरे', 'न आने वाला कल', 'अंतराल', 'काँपता हुआ दरिया'* जैसे लेखन उनके मनोविश्लेषणात्मक गद्यशिल्प का सशक्त उदाहरण हैं। उन्होंने *'क्वार्टर', 'पहचान', 'वारिस'* जैसे कहानी संग्रहों में कुल 54 कहानियाँ प्रस्तुत कीं, जो मानव-मन की परतों को सजीवता से खोलती हैं। यात्रा-वृत्तांत जैसे *'आखिरी चट्टान', 'ऊँची झील', 'पतझड़ का रंगमंच'* में लेखक ने संवेदनशील पर्यवेक्षण क्षमता के साथ स्थलों को आत्मीय अनुभव में बदला है। उनके निबंध-संग्रह *'परिवेश', 'रंगमंच और शब्द', 'बकलम खुद', 'साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि'* हिंदी आलोचना और रंगमंचीय चिंतन को एक वैचारिक ठोस धरातल प्रदान करते हैं। उन्होंने *'शाकुंतलम्'* और *'मृच्छकटिकम्'* जैसे संस्कृत नाटकों का हिंदी में रूपांतरण भी किया, जिससे शास्त्रीय नाट्य-परंपरा को आधुनिक हिंदी पाठकों से जोड़ा जा सका। इन सब कृतियों में मोहन राकेश का सबसे ऐतिहासिक और चर्चित योगदान *'आषाढ़ का एक दिन'* है, जो आधुनिक हिंदी रंगमंच की दिशा को निर्णायक रूप से मोड़ने वाला नाटक सिद्ध हुआ। वर्षा ऋतु के आरंभिक दिन से जुड़ा इसका शीर्षक केवल एक मौसमी स्थिति का संकेत नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर घटित होने वाले भावनात्मक परिवर्तन, वियोग, त्याग और आत्मसंघर्ष का प्रतीक बनता है। इस नाटक में लेखक ने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में आधुनिक मनुष्य की गूढ़ मनोवृत्तियों, संबंधों की उलझनों और रचनात्मकता के द्वंद्व को अत्यंत बौद्धिक गहराई के साथ प्रस्तुत किया है। मोहन राकेश का यह नाटक हिंदी रंगमंच को कृत्रिमता और अतिनाटकीयता से बाहर निकालकर संवाद-केंद्रित, संवेदनशील और यथार्थपरक प्रस्तुति की ओर ले जाता है, जहाँ नायक-नायिका के बीच का मौन, संवादों की मितव्ययता और मंचीय बिंब नाटकीय प्रभाव को अत्यंत ऊँचाई तक ले जाते हैं। इसीलिए, *'आषाढ़ का एक दिन'* को हिंदी रंगमंच की आधुनिक यात्रा का प्रारंभ-बिंदु माना जाता है और मोहन राकेश को उस यात्रा का वैचारिक शिल्पकार।

- **मोहन राकेश और 'आषाढ़ का एक दिन' का ऐतिहासिक-साहित्यिक महत्त्व**

मोहन राकेश हिंदी साहित्य के उन आधुनिक रचनाकारों में अग्रणी हैं जिन्होंने नाटक को साहित्य और रंगमंच दोनों ही स्तरों पर नई दिशा प्रदान की। वे नई कहानी आंदोलन के प्रवर्तकों में रहे, परंतु उन्होंने नाटक विधा को जो प्रतिष्ठा दी, वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनका नाटक *'आषाढ़ का एक दिन'*, जो 1958 में प्रकाशित हुआ, हिंदी रंगमंच के लिए एक मील का पत्थर माना जाता है। यह नाटक न केवल उनकी नाट्य दृष्टि की गहराई को दर्शाता है, बल्कि यह आधुनिक हिंदी नाटक की शुरुआत का प्रतीक भी बन गया है। 'आषाढ़ का एक दिन' ऐतिहासिक घटनाओं और पात्रों के माध्यम से आधुनिक संवेदनाओं को प्रस्तुत करता है। इसमें कवि कालिदास को केंद्रीय पात्र बनाकर उनके भीतर के आत्मसंघर्ष, द्वंद्व, प्रेम और सृजनात्मकता के क्षरण को अत्यंत संवेदनशीलता से उकेरा गया है। इस नाटक में ऐतिहासिकता केवल पृष्ठभूमि बनती है, वास्तविक संघर्ष एक व्यक्ति के भीतर का है—प्रेम और यश के बीच का, संबंध और सृजन के बीच का। मोहन राकेश ने जिस तरह से मल्लिका जैसे चरित्र को गढ़ा है, वह हिंदी नाट्य साहित्य को स्त्री के अंतर्मन की दुर्लभ अभिव्यक्ति प्रदान करता है। नाटक का बिंबधर्मी शिल्प, गद्य में छिपा काव्य और संवादों की मितव्ययता इसे अन्य ऐतिहासिक नाटकों से अलग बनाते हैं। इस नाटक में अतीत का गौरवगान या अतिनाटकीयता नहीं है, बल्कि यह सूक्ष्म, आधुनिक और संवेदनशील दृष्टिकोण से इतिहास और मनोविज्ञान का संयोजन है। यही कारण है कि 'आषाढ़ का एक दिन' को भारतीय रंगमंच पर व्यापक सफलता मिली और यह अनेक भाषाओं में अनूदित होकर बार-बार मंचित हुआ। मोहन राकेश ने इस नाटक के माध्यम से सिद्ध किया कि हिंदी नाटक केवल पौराणिक या सामाजिक विषयों तक सीमित नहीं, बल्कि वह व्यक्ति की आंतरिक जटिलताओं, संवेदनाओं और अस्तित्व की गहराइयों को भी स्पर्श कर सकता है। इसलिए 'आषाढ़ का एक दिन' न केवल मोहन राकेश की रचनात्मक प्रतिभा का प्रतीक है, बल्कि आधुनिक हिंदी नाटक की एक नई शुरुआत का उद्घोष भी है।

आधुनिक हिंदी नाटक का प्रारंभिक स्तंभ

मोहन राकेश द्वारा रचित *"आषाढ़ का एक दिन"* 1958 में प्रकाशित हुआ था और इसे हिंदी नाटक के आधुनिक युग का प्रारंभिक नाटक माना जाता है। यह नाटक महाकवि कालिदास के जीवन के निजी पक्ष को केंद्र में रखता है, जिसकी घटनाएँ अनुमानित रूप से 100 ई°पू° से 500 ई° के बीच घटित मानी

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

जाती हैं। नाटक की विषयवस्तु एक संवेदनशील प्रेम त्रिकोण, आत्मसंघर्ष, और यश तथा मानवीय संबंधों के बीच द्वंद्व को दर्शाती है।

1959 में यह नाटक संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हुआ, जिसे उस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ नाटक घोषित किया गया। इसके बाद कई प्रतिष्ठित रंगमंच निर्देशकों द्वारा इसे मंचित किया गया, जिससे यह भारतीय रंगमंच के इतिहास में एक मील का पत्थर बन गया। 1971 में प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक मणि कौल ने इसी नाम से इस पर एक फिल्म बनाई, जिसने फिल्मफेयर पुरस्कारों में वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म का खिताब हासिल किया।

इस नाटक का शीर्षक महाकवि कालिदास की प्रसिद्ध काव्यकृति *मेघदूतम्* की प्रारंभिक पंक्तियों से प्रेरित है। *आषाढ़* उत्तर भारत में वर्षा ऋतु के आरंभ का प्रतीक महीना है, जब आकाश में काले मेघ उमड़ते हैं और वातावरण में एक विशेष भावुकता व्याप्त हो जाती है। इस दृष्टि से शीर्षक "आषाढ़ का एक दिन" केवल एक काल विशेष को नहीं, बल्कि उस ऋतु के भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव को भी दर्शाता है — विशेषकर विरह, आकांक्षा और परिवर्तन के संदर्भ में। नाटक में यह दिन कालिदास के जीवन का वह निर्णायक क्षण बन जाता है, जहाँ वह यश की ओर बढ़ते हुए व्यक्तिगत संबंधों और भावनाओं से जूझता है।

साहित्य समीक्षा

राकेश, एम. (2015)। मोहन राकेश का नाटक *'आषाढ़ का एक दिन'* हिंदी रंगमंच की दिशा और दृष्टि को नया मोड़ देने वाला वह ऐतिहासिक नाटक है, जिसने आधुनिक हिंदी नाटक की शुरुआत की। वर्ष 1958 में प्रकाशित यह नाटक केवल एक ऐतिहासिक कथा नहीं, बल्कि प्रेम, त्याग, आत्मसंघर्ष और मानवीय संबंधों की जटिलताओं का गहन चित्रण है। वर्षा ऋतु के आरंभिक दिन से जुड़ा इसका शीर्षक केवल मौसम नहीं, बल्कि मन के भीतर उठते भावों की भी प्रतीकात्मक व्याख्या करता है। इस नाटक ने पहली बार हिंदी रंगमंच को कृत्रिमता और अति-नाटकीयता से निकालकर संवाद-प्रधान, यथार्थपरक और संवेदनशील मंचीय प्रस्तुति की ओर अग्रसर किया। कालिदास और मल्लिका के पात्रों के माध्यम से लेखक ने कला और जीवन, प्रेम और यश, भावना और यथार्थ के द्वंद्व को अत्यंत सशक्त रूप में प्रस्तुत किया, जिससे यह नाटक हिंदी साहित्य और रंगमंच में मील का पत्थर बन गया।

पटेल, वी. (2018)। यह लेख 'विद्यायन' नामक एक समकक्ष-समीक्षित अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक ई-जर्नल में प्रकाशित हुआ है, जिससे इसकी अकादमिक प्रामाणिकता स्पष्ट होती है। लेखक ने विशेष रूप से *'आषाढ़ का एक दिन', 'आधे-अधूरे'* और *'लहरों के राजहंस'* जैसे नाटकों की संरचना, उनके सामाजिक-मानसिक संघर्षों और पात्रों की अंतरात्मा की पड़ताल की है। यह लेख बताता है कि राकेश के नाटक केवल मंचीय प्रस्तुति नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक जटिलताओं और सामाजिक अंतर्द्वंद्वों का साहित्यिक अनावरण हैं। मल्लिका, अंबिका, और कालिदास जैसे पात्रों के माध्यम से मानवीय मूल्य, स्त्री दृष्टिकोण और आत्म-संघर्ष जैसे पहलुओं को गहराई से प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन राकेश की रचनात्मकता के उन पहलुओं को सामने लाता है जो पारंपरिक नाटकों से उन्हें भिन्न और प्रगतिशील बनाते हैं।

ग्रोवर, एम. (2024)। एम. ग्रोवर द्वारा रचित यह अध्याय *"भारत में वृद्धावस्था और आयुवाद की संस्कृतियाँ"* शीर्षक पुस्तक में प्रकाशित हुआ है, जो रूटलेज इंडिया जैसी प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्था द्वारा 2024 में प्रकाशित की गई। इसमें लेखक ने भारतीय रंगमंच में उम्र और अभिनय के संबंध को सांस्कृतिक, सामाजिक और सौंदर्यबोधात्मक दृष्टिकोण से विश्लेषित किया है। विशेष रूप से यह अध्ययन दर्शाता है कि मंच पर किसी अभिनेता की उम्र किस प्रकार उसके किरदार, मंचीय व्याख्या और दर्शकों की धारणा को प्रभावित करती है। ग्रोवर यह भी इंगित करते हैं कि वरिष्ठ पात्रों की प्रस्तुति में अक्सर समाज की पूर्वग्रहपूर्ण दृष्टि झलकती है, और कैसे निर्देशक व अभिनेता मिलकर उस छवि को बदलने का प्रयास करते हैं। यह लेख न केवल मंच पर अभिनय की आयु-राजनीति को विश्लेषित करता है, बल्कि यह भी बताता है कि कालजयी नाटकों—जैसे मोहन राकेश के नाटकों—में समय और आयु कैसे चरित्र की गहराई से जुड़ जाते हैं।

दास, पी. आर. (2021)। पी. आर. दास की यह कृति भारतीय रंगमंच में महिला नाटककारों के योगदान को रेखांकित करती है और नारी दृष्टिकोण से सृजनशीलता के विविध पक्षों को प्रस्तुत करती है। *अपना रंगमंच* शीर्षक से प्रकाशित यह ग्रंथ पार्ट्रिज पब्लिशिंग द्वारा 2021 में प्रकाशित हुआ है, और इसमें समकालीन और पारंपरिक महिला नाट्यलेखन के तुलनात्मक विश्लेषण को भी शामिल किया गया है। यह पुस्तक दिखाती है कि कैसे महिला नाटककारों ने पारंपरिक पुरुष-प्रधान रंगमंच से हटकर अपने जीवन, संघर्ष और भावनाओं को मंचीय अभिव्यक्ति दी। इसमें मोहन राकेश जैसे लेखकों के नाटकों की तुलना में महिलाओं की दृष्टि और प्रस्तुति शैली को विश्लेषित किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

'मल्लिका' जैसे पात्र कैसे स्त्री-संवेदना के निकट आते हैं। दास का विश्लेषण न केवल नारी सशक्तिकरण पर बल देता है, बल्कि हिंदी रंगमंच में स्त्री की विचारशील उपस्थिति को भी रेखांकित करता है।

सिंह, वी. (2024)। *"बनारस: शहर के हृदय में एक यात्रा"* एक सांस्कृतिक यात्रा-वृत्तांत है, जो बनारस शहर की ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और जीवन-दर्शन से जुड़ी विशेषताओं को संवेदनशील भाषा में प्रस्तुत करता है। 2024 में पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया द्वारा प्रकाशित यह कृति बनारस को एक ठोस भूगोल के बजाय एक जीवंत सांस्कृतिक अनुभव के रूप में चित्रित करती है। लेखक ने घाटों, गलियों, मंदिरों, लोकाचार, मृत्यु-दर्शन और बनारसी जीवनशैली को न केवल शब्दों में पिरोया है, बल्कि एक पाठक को आत्मिक स्तर पर शहर से जोड़ने का प्रयास किया है। यह ग्रंथ उस सांस्कृतिक भूमि को समझने में सहायक है जहाँ से मोहन राकेश जैसे लेखक उत्पन्न हुए—जो पारंपरिक भारत के भीतर आधुनिक चेतना को तलाशते हैं। अतः यह संदर्भ *'आषाढ़ का एक दिन'* जैसे नाटकों की सांस्कृतिक जड़ों को समझने के लिए एक अप्रत्यक्ष लेकिन उपयोगी पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

कथानक में उपस्थिति और प्रभाव

1. अंबिका का जीवन-दर्शन संवादों के माध्यम से

'आषाढ़ का एक दिन' में अंबिका का पात्र एक अनुभवी, यथार्थवादी और संतुलित दृष्टिकोण वाली माँ का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके संवादों के माध्यम से जीवन का गहन दर्शन उभरकर सामने आता है। वह जीवन को केवल भावनाओं और सपनों के सहारे नहीं देखती, बल्कि यथार्थ की कठोर ज़मीन पर खड़े होकर मूल्यांकन करती है। अंबिका अपने अनुभवों के माध्यम से मल्लिका को समझाती है कि प्रेम और त्याग महत्वपूर्ण हैं, लेकिन जीवन में स्थायित्व और सम्मान तभी आता है जब निर्णय व्यावहारिक विवेक के साथ लिए जाएँ। जब मल्लिका कालिदास के उज्जयिनी जाने की सहमति देती है, तब अंबिका का संवाद—"भावना से जीवन नहीं चलता"—न केवल चेतावनी है, बल्कि एक जीवन का सार भी है। अंबिका का हर संवाद न केवल कथानक को आगे बढ़ाता है, बल्कि दर्शक को आत्मनिरीक्षण की ओर भी प्रेरित करता है। उसके शब्दों में मातृत्व की करुणा, स्त्री जीवन की समझ और सामाजिक वास्तविकताओं की स्पष्ट झलक मिलती है।

2. मल्लिका की नारी अस्मिता की विकास-यात्रा में अंबिका की भूमिका

मल्लिका की नारी अस्मिता का निर्माण केवल उसकी प्रेम की भावना से नहीं होता, बल्कि उसमें आत्मसम्मान, आत्मनिर्णय और आत्मबल की जो विशेषताएँ दिखाई देती हैं, उसका गहरा संबंध अंबिका के संस्कारों और दृष्टिकोण से है। अंबिका उसे कभी बाधित नहीं करती, पर हर मोड़ पर एक विवेकशील मार्गदर्शक की तरह उपस्थित रहती है। जब कालिदास के उज्जयिनी जाने का निर्णय लिया जाता है, तब मल्लिका की स्वीकृति में त्याग तो है ही, परंतु वह भावनात्मक निर्बलता नहीं, बल्कि एक समझदार स्त्री की सोच का प्रमाण है—जिसे अंबिका की शिक्षा ने पोषित किया है। प्रियंगुमंजरी द्वारा जब मल्लिका को अपने साथ उज्जयिनी चलने और किसी राजसेवक से विवाह करने का प्रस्ताव मिलता है, तब उसका आत्मसम्मान से भरा इंकार यह दर्शाता है कि मल्लिका केवल प्रेम करने वाली स्त्री नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और विचारशीलता से युक्त नारी भी है। अंबिका की चुप सहमति, उसका समर्थन और जीवन के प्रति उसकी समझ मल्लिका की नारी अस्मिता की यात्रा को दिशा प्रदान करती है।

3. प्रतीकात्मक दृष्टिकोण से अंबिका: मातृत्व और यथार्थबोध का प्रतिनिधित्व

नाटक में अंबिका का पात्र केवल माँ की भूमिका तक सीमित नहीं है, बल्कि वह भारतीय स्त्री जीवन की एक ऐसी प्रतिनिधि बनकर उभरती है, जो मातृत्व के साथ-साथ सामाजिक यथार्थबोध की प्रतिमूर्ति है। प्रतीकात्मक दृष्टिकोण से देखा जाए तो अंबिका उस जीवनदृष्टि की प्रतीक है, जिसमें करुणा और विवेक साथ-साथ चलते हैं। उसकी उपस्थिति नाटक में उस विवेकशील चेतना का कार्य करती है, जो भावनाओं को अंधत्व से बचाकर दिशा देती है। अंबिका के चरित्र में नारी जीवन के दोनों पक्ष—संवेदना और संघर्ष—संतुलित रूप में उपस्थित हैं। वह एक ओर बेटी के निर्णयों को सहजता से स्वीकार करती है, वहीं दूसरी ओर उसे उनके परिणामों के लिए मानसिक रूप से तैयार भी करती है। इस दृष्टि से अंबिका नाटक के भाव-जगत में एक स्थिर, विचारशील शक्ति है जो नारी जीवन के यथार्थ को साकार करती है। उसकी उपस्थिति मल्लिका की आत्मनिर्भरता को पोषित करती है और पूरे कथानक को गहराई से जोड़ती है।

समकालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य

1. आज की पीढ़ी में माँ-बेटी संबंधों में आने वाले तनाव

वर्तमान समाज में बदलते सामाजिक, आर्थिक और वैचारिक परिवेश ने पारिवारिक संबंधों की प्रकृति को प्रभावित किया है, विशेषतः माँ-बेटी के संबंधों में। आज की पीढ़ी की बेटियाँ अधिक आत्मनिर्भर, शिक्षित और निर्णय लेने में सक्षम हैं। वे अपने करियर, प्रेम और जीवन से जुड़ी प्राथमिकताओं को स्वयं तय करना

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

चाहती हैं। वहीं दूसरी ओर माताएँ अपने अनुभवों के आलोक में बेटियों को सावधानी, मर्यादा और व्यावहारिक निर्णयों की ओर ले जाना चाहती हैं। इस अंतर से कई बार भावनात्मक तनाव उत्पन्न होता है, जहाँ संवाद का अभाव द्वंद्व को बढ़ा देता है। मोहन राकेश के *'आषाढ़ का एक दिन'* में मल्लिका और अंबिका का संबंध इस तनाव के भीतर संवाद और संवेदना की राह दिखाता है। अंबिका अपनी बेटी के निर्णयों से सहमत न होते हुए भी उसे बाधित नहीं करती, बल्कि उसकी भावना को समझने का प्रयास करती है। यह उदाहरण आधुनिक समाज में आवश्यक उस संतुलन की ओर संकेत करता है, जिससे संबंधों में टकराव नहीं, परस्पर समझ विकसित हो सके।

2. स्वतंत्रता और अनुभवजन्य चेतावनियों के बीच सामंजस्य

माँ-बेटी के संबंधों में आज सबसे बड़ा संघर्ष स्वतंत्रता और अनुभव के बीच संतुलन बनाने का है। बेटियाँ अपने जीवन से जुड़े निर्णय लेने के लिए स्वतंत्रता चाहती हैं, जबकि माताएँ अपने अनुभवों के आधार पर संभावित परिणामों से आगाह करती हैं। यह संघर्ष तब तक टकराव में परिवर्तित नहीं होता, जब तक दोनों पक्ष संवाद में संलग्न रहते हैं। *'आषाढ़ का एक दिन'* में यह सामंजस्य अंबिका और मल्लिका के संबंधों में स्पष्ट दिखाई देता है। अंबिका मल्लिका को कालिदास से प्रेम करने से नहीं रोकती, लेकिन उसे जीवन की वास्तविकताएँ बार-बार याद दिलाती है। वह यह नहीं कहती कि प्रेम मत करो, बल्कि यह कहती है कि केवल भावना के सहारे जीवन नहीं चलता। यह संवाद ही उस संतुलन को रचता है जो आज भी उतना ही आवश्यक है। जब माँ स्वतंत्रता को स्वीकृति देती है और बेटी अनुभव को अनसुना नहीं करती, तभी एक समरस और सहअस्तित्वपरक रिश्ता बनता है।

3. नारी सशक्तिकरण और पारिवारिक संवाद की भूमिका

नारी सशक्तिकरण का वास्तविक अर्थ केवल अधिकारों की प्राप्ति नहीं, बल्कि निर्णय लेने की स्वतंत्रता और उस निर्णय में परिवार का भावनात्मक सहयोग भी है। आज जब समाज नारी सशक्तिकरण की ओर बढ़ रहा है, तब यह आवश्यक हो गया है कि परिवारों में संवाद की संस्कृति को मजबूत किया जाए। मल्लिका का चरित्र एक ऐसी नारी का उदाहरण है, जो प्रेम करती है, त्याग करती है, और फिर भी अपने आत्मसम्मान से समझौता नहीं करती। अंबिका उसका मार्गदर्शन करती है, लेकिन उसे नियंत्रित नहीं करती। यह संबंध दर्शाता है कि जब स्त्री को परिवार में स्वतंत्र निर्णय लेने का अवसर मिलता है और माता-पिता विशेषतः माँ उसके निर्णय में सहायक होती है, तो वह केवल प्रेमिका या पत्नी ही नहीं, बल्कि

एक सशक्त, आत्मनिर्भर और विचारशील नारी बनकर उभरती है। इस प्रकार *'आषाढ़ का एक दिन'* में मल्लिका और अंबिका का रिश्ता समकालीन सामाजिक संरचना में स्त्री अस्मिता और पारिवारिक संवाद की अंतःक्रिया का आदर्श रूप प्रस्तुत करता है, जो आज के युग में अत्यंत प्रासंगिक है।

नाटकीय संरचना और कथा-सार: "आषाढ़ का एक दिन"

मोहन राकेश द्वारा रचित *"आषाढ़ का एक दिन"* एक त्रिखंडीय (तीन अंकों वाला) नाटक है, जो महाकवि कालिदास के जीवन के एक काल्पनिक और संवेदनशील चरण को अत्यंत मानवीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है।

- **द्वंद्व की शुरुआत**

कहानी की शुरुआत युवा कालिदास से होती है, जो हिमालय की गोद में बसे एक शांत, सुरम्य गाँव में कला साधना और प्रेम में लीन है। वहाँ उसका संबंध एक संवेदनशील और आत्मत्यागी युवती *मल्लिका* से है। उनका प्रेम निश्छल और गहन है, जो शब्दों से अधिक आत्माओं के स्तर पर जुड़ा हुआ है। यह संतुलित जीवन अचानक तब विचलित होता है जब उज्जयिनी से आए सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के प्रतिनिधि कालिदास को दरबार में आमंत्रित करते हैं। अब कालिदास के सामने एक कठिन निर्णय है — अपने शांतिपूर्ण प्रेममय जीवन को थामे रखना या यश और वैभव की ओर अग्रसर होना। मल्लिका अपने प्रेम को त्यागकर, उसे उज्जयिनी जाने के लिए प्रेरित करती है। इस त्याग के साथ, कालिदास अपने गाँव से विदा ले लेता है।

- **यश और वियोग**

कालिदास अब उज्जयिनी के राजकवि बन चुके हैं और उनकी ख्याति चारों ओर फैल गई है। वह एक सुंदर और कुलीन स्त्री *प्रियंगुमंजरी* से विवाह कर चुका है। दूसरी ओर, मल्लिका अकेली और उपेक्षित रह जाती है। एक दिन कालिदास और प्रियंगुमंजरी, अपने सेवकों के साथ, गाँव आते हैं। कालिदास मल्लिका से नहीं मिलता, लेकिन प्रियंगुमंजरी उससे भेंट करती है। वह मल्लिका को सहानुभूति देती है और उसे सखी बनाकर किसी योग्य दरबारी से विवाह कराने का प्रस्ताव देती है। मल्लिका, अपने आत्मसम्मान और स्वाभिमान को अक्षुण्ण रखते हुए इस कृपा को दृढ़ता से अस्वीकार कर देती है।

- **टूटे हुए संबंध और असहायता की त्रासदी**

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

समय बीतता है और अंतिम दृश्य में कालिदास पुनः गाँव लौटता है — इस बार सबकुछ त्यागकर, संभवतः आत्ममंथन के बाद। अब वह न तो दरबारी कवि है, न कोई पद-प्रतिष्ठा शेष है। वहीं, मल्लिका जीवन की कठिन परिस्थितियों से टूट चुकी है। उसे आजीविका हेतु वेश्या बनना पड़ा और एक छोटी बेटी की माँ बन चुकी है। कालिदास जब मल्लिका से मिलता है, तो न केवल उसका वर्तमान देखकर, बल्कि अपने अतीत के निर्णयों की गूँज सुनकर भी वह भीतर तक टूट जाता है। मल्लिका की करुण सच्चाइयाँ उसे झकझोर देती हैं और वह गहरे पश्चाताप के साथ मंच से अंतर्धान हो जाता है। इसी मार्मिक बिंदु पर नाटक का समापन होता है।

निष्कर्ष

मोहन राकेश का नाटक *'आषाढ़ का एक दिन'* केवल ऐतिहासिक या प्रेमकथा नहीं, बल्कि संबंधों की गहराई और स्त्री मन की संवेदना को उद्‌घाटित करने वाला एक कालजयी रचना है। इस नाटक में मल्लिका और उसकी माँ अंबिका के बीच जो संबंध चित्रित हुआ है, वह आधुनिक समय में भी उतना ही प्रासंगिक और प्रेरणादायक है। यह संबंध आत्मीयता, संवाद, परामर्श और सम्मान का आदर्श मिश्रण है, जो माँ-बेटी के बीच भावनात्मक जुड़ाव के साथ वैचारिक भिन्नता को भी स्वीकार करता है। अंबिका, जो अनुभव और यथार्थ की प्रतिनिधि है, मल्लिका को प्रेम करने से नहीं रोकती, बल्कि उसे यथार्थ के धरातल पर सोचने और निर्णय लेने की समझ देती है। वहीं मल्लिका अपने निर्णयों में स्वतंत्र है, परंतु उसमें वह भावनात्मक परिपक्वता है जो उसकी माँ के विचारों से पोषित है। यह परस्पर संवाद और विश्वास आज की सामाजिक संरचना में विशेष महत्व रखता है, जहाँ पीढ़ियों के बीच संवाद की कमी और टकराव की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। आज जब युवा पीढ़ी स्वतंत्रता चाहती है और माता-पिता सुरक्षा व मार्गदर्शन, तब मल्लिका और अंबिका का यह रिश्ता बताता है कि यदि संवाद, सहमति और भावनात्मक समझ बनी रहे तो कोई भी संबंध संघर्ष का रूप नहीं लेता। यह संबंध माँ-बेटी के रिश्ते में केवल भावुकता नहीं, बल्कि विवेक, गरिमा और गहराई लाने का संदेश देता है। अतः यह कहा जा सकता है कि *'आषाढ़ का एक दिन'* में मल्लिका और अंबिका का रिश्ता आज के सामाजिक परिवेश में पारिवारिक संवाद, स्त्री अस्मिता और पीढ़ियों के बीच सेतु निर्माण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक उदाहरण है।

संदर्भ

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

1. राकेश, एम. (2015). वर्षा ऋतु में एक दिन: वह नाटक जिसने आधुनिक हिंदी रंगमंच की शुरुआत की। पेंगुइन यूके।
2. पटेल, वी. (2018)। सार का अनावरण: मोहन राकेश के नाटकों में विषयों की खोज। विद्यायन-एक अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक समकक्ष-समीक्षित ई-जर्नल-ISSN 2454-8596, 4(2)।
3. ग्रोवर, एम. (2024)। समय-यात्री के रूप में अभिनेता: मंच पर अभिनय की उम्र की राजनीति। भारत में वृद्धावस्था और आयुवाद की संस्कृतियों में (पृष्ठ 157-176)। रूटलेज इंडिया।
4. दास, पी. आर. (2021). अपना रंगमंच: भारतीय महिला नाटककारों का परिप्रेक्ष्य। पार्ट्रिज पब्लिशिंग।
5. सिंह, वी. (2024). बनारस: शहर के हृदय में एक यात्रा। पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड।
6. एम. राकेश (2013)। आषाढ़ का एक दिन - मूल पाठ में मल्लिका और अंबिका के संवाद स्पष्ट करते हैं कि पारिवारिक उत्तरदायित्वों और स्त्री अस्मिता के बीच संघर्ष आज भी उतना ही प्रासंगिक है।
7. मिश्रा, आर. (2021) मल्लिका का स्त्री चेतना और पारिवारिक दबावों का संघर्ष, हिंदी साहित्यिक पत्रिका (ISSN: 2349-8799)।
8. शर्मा, ए. (2020)। नाट्यशास्त्र और स्त्री विमर्श: आधुनिक परिप्रेक्ष्य से विश्लेषण, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी
9. दुबई, नीला (2019). *'आषाढ़ का एक दिन' में नारी पात्रों की सामाजिक स्थिति*
10. चतुर्वेदी, वंदना (2017). *मल्लिका और अम्बिका का संवाद: समकालीन नारी दृष्टि से अध्ययन*
11. तिवारी, के. (2018). *भारतीय नाटक में मातृत्व और नारी आकांक्षाओं का द्वंद्व*
12. कुमार, संजय (2020). *साहित्य में मातृ-प्रतीक और स्त्री स्वातंत्र्य की अवधारणा*
13. वर्मा, नंदिता (2022). *आषाढ़ का एक दिन में पीढ़ियों के मूल्यों का टकराव* सिंह, रीना (2023). *नारीवादी दृष्टिकोण से अम्बिका और मल्लिका के संबंधों की पुनर्व्याख्या*
14. पांडे, आर. (2015). *मातृत्व और आत्म-अनुशासन: एक पुनर्पाठ*
15. जोशी, मीना (2019). *नाटक में स्त्री की चुप्पी और प्रतिरोध: मल्लिका का विश्लेषण*

16. सक्सेना, पी. (2016). *आषाढ़ का एक दिन: पारिवारिक द्वंद्व की आधुनिक झलकियां*
17. कुलकर्णी, एच. (2018). *नाट्यपरंपरा में माताओं का मूक विद्रोह*
18. पाठक, एस. (2021). *आषाढ़ का एक दिन और स्त्री संघर्ष की शाश्वत कथा*